Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

राजा छत्रपति सिंह जू देव की पखावज-वादन में सृजनशीलता

PRADEEP TANK

Assistant Professor, Department of Music, S.S Jain Subodh Mahila Shikshak Prashikshan Mahavidyalaya, Jaipur

सार

राजा छत्रपति सिंह जूदेव बिजना राज के एकमात्र संगीत साधक हुए जिन्होंने अपने सांगीतिक सफर के दौरान गायन, वादन के पखावज, सितार वाद्य यंत्रों में अनेक प्रकार की रचना की। राजा जी अपनी सहज सरल व्यक्तित्व व सृजनात्मक विचारधारा से सदैव नवाचार किया करते, सदैव सांगीतिक सोच के चलते पखावज व सितार के लिए नवसृजन किया करते। राजा जी सृर्जनात्मक व नवीन विचारधारा व कला से ओत-प्रोत व्यक्तित्व होने के कारण आप सदैव नवाचार करते थे। ''सत्पक्ष प्रदर्शिका' में रागों के आधार पर राजा जी ने लयबद्व तरीके से गीतों की रचना की। वंदे मातरम, सारे जहाँ से अच्छा जैसे गीतों को राजा जी ने संगीत की गहन साधना और ज्ञान से रचनाओं को पुस्तक में समाहित किया। ज्यादातर पखावज के कलाकार पखावज पर चैताल, सूल ताल, धमार इन 3 तालां में ही पखावज वादन करते है लेकिन राजा जी ने कुछ अलग ही सोचा जितनी भी पखावज वादन में प्रयुक्त अप्रचलित तालों को प्रचलन में लाने के लिए नया रूप दिया।

कुंजी शब्द: राजा छत्रपति सिंह जू देव, पखावज-वादन, सृजनशीलता

प्रस्तावना

राजा छत्रपति सिंह जूदेव बिजना राज के एकमात्र संगीत साधक हुए जिन्होंने अपने सांगीतिक सफर के दौरान गायन, वादन के पखावज, सितार वाद्य यंत्रों में अनेक प्रकार की रचना की। राजा जी अपनी सहज सरल व्यक्तित्व व सृजनात्मक विचारधारा से सदैव नवाचार किया करते, सदैव सांगीतिक सोच के चलते पखावज व सितार के लिए नवसृजन किया करते। साथ ही युवा पीढ़ी को सत्पथ पर चलने व संस्कृति से जोड़ने के लिए रचना पुस्तक को माध्यम बनाया जिसमें नई रचनाओं व उपदेशें को समाहित किया।

राजा छत्रपति सिंह जूदेव ने संगीत शास्त्र की विधा गायन वादन एवं नृत्य का गहन अध्ययन किया, साथ ही संगीत क्षेत्र में उस गहन साधना व अध्ययन का प्रयोग किया। राजा जी सृर्जनात्मक व नवीन विचारधारा व कला से ओत-प्रोत व्यक्तित्व होने के कारण आप सदैव नवाचार करते थे। आपकी 'सत्पथ प्रदर्शिका' नामक पुस्तिका आपके नवाचार, सृजनात्मकता एवं योगदान का साक्षात् स्वरूप है। इस पुस्तक में राजा जी ने गीत-संगीत से संबंधित गीतों की रचनाओं को लिखा, साथ ही सद्उपदेश भी दिए। आपकी इस पुस्तिका का मूल उद्देश्य लोगों को सन्मार्ग दिखाना है। राजा जी की यह एक अद्वितीय पुस्तक है जिसमें सदोपदेश के साथ हरि-कीर्तन राष्ट्रीय-गीत को स्वर लिपपिबद्ध किया।

राजा जी द्वारा लिखित पुस्तिका से ज्ञात होता है कि राजा जी युवाओं को संगीत के ज्ञान के साथ जीवन में सतमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना था। ''सत्पक्ष प्रदर्शिका' में रागों के आधार पर राजा जी ने लयबद्व तरीके से गीतों की रचना की। वंदे मातरम, सारे जहाँ से अच्छा जैसे गीतों को राजा जी ने संगीत की गहन साधना और ज्ञान से रचनाओं को पुस्तक में समाहित किया। पुस्तक का नाम सत्पथ प्रदर्शिका रखी, इस पुस्तिका में सर्वप्रथम संगीत से जुड़ी उन छोटी-छोटी बातों

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

को दर्शाया जिससे विद्यार्थियों को संगीत सीखने में सहायक सिद्ध हो सके। साथ ही संगीत के स्वर और उससे संबधित आरोह अवरोह-पकड़ का भी ज्ञान हो सके एवं लय-ताल-स्वर इन तीनों का ज्ञान प्राप्त हो सके।

राजा जी ने अपनी पुस्तक में आरोह-अवरोह पकड़ के साथ राग व ताल को लिखने व पहचानने के लिए स्वर, तालचिन्ह व गायन में प्रयुक्त होने वाले स्वर रचनाओं को लिपिबद्ध कर दर्शाया। यही नहीं एक मात्रा से लेकर अन्य कई मात्राओं तक भी उसे लिखने का तरीका भी बताया। माँ सरस्वती की रचना राजा जी ने राग काफी व ताल-त्रिताल, मात्रा 16 में की है श्री सरस्वती स्तवन:

वन्दन हे शारदे नमर करूं।

विधि सहि अरपे अचल विमल सुमति को हृदय मल सदा हरण कर,

वसन सितोत्तम सुधि बल कमले तू शोभती जग माता।

रसिक मधुर तर तव वीणा सुवादन करत।।

पंडित डालचंद शर्मा जी से दिनांक 6.12.2018 को संस्कृति मंत्रालय। पंडित जी ने बताया कि राजाजी का व्यक्तित्व बहुत ही सहज, सरल एवं मिलनसार व्यक्तित्व था। राजा जी संगीत के बहुत ही बड़े साधक थे, क्योंकि संगीत बहुत ही गहन विद्या है जिसे संगीत-साधना के द्वारा ही समझा जा सकता है। जैसे-जैसे रियाज करते जाते हैं वैसे-वैसे संगीत साधना में एक रास्ते से अनेक रास्ते निकलते जाते है। राजाजी भी एक ऐसे साधक थे जो सदैव निरन्तजर संगीत की साधना करते रहते थे। राजा जी सदैव नई सृजनात्मक क्रियाओं के बल पर संगीत के क्षेत्र में पखावज की बहुत सी नूतन रचनायें की जो संगीत जगत के लिए अद्भुत कार्य है।[1]

अखिलेश जी ने बताया कि राजा जी संगीत के क्षेत्र में पखावज के लिए बहुत ही गहनता से सोच विचार किया करते थे, राजा जी का मानना था कि ज्यादातर पखावज के कलाकार पखावज पर चैताल, सूल ताल, धमार इन 3 तालां में ही पखावज वादन करते है लेकिन राजा जी ने कुछ अलग ही सोचा जितनी भी पखावज वादन में प्रयुक्त अप्रचलित तालों को प्रचलन में लाने के लिए नया रूप दिया।

पखावज पर बजने वाली ताल मत ताल 9 मात्रा, रूद्र ताला ग्यारह मात्रा, इन सभी तालों के विस्तार क्रम में परिवर्तन कर नया विस्तार क्रम बनाया जिसके लिए सर्वप्रथम ताल के ठेके की लय को बांधकर उठान, सादा परन, चक्रदार परन, फरमाइशी चक्रदार परन तथा अंत में रेला और परन बजाकर समापन किया। राजा जी ने पखावज़-वादन का व्यवस्थित क्रम बनाया और यही क्रम राजा ने सभी तालों में रखा। जैसे कि उदाहरण के तौर पर रचना के बोल[2]:-

धातिट धातिट धा धा तिट क्रधा तिट धातिटधा क्रधीं

तिंता तिटगिन धा तिटकत गदिगन धा

अब इसमें जोड़ तोड़ कर किसी भी ताल में बजाया जा सकता है। राजा जी ने सादरा ताल की रचना की। साथ ही 11, 13, 15, 17, 19, 21 इन तालों का समावेश कर अन्य नवीन तालों की रचना की।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

द्यानेश्वर मौली देशमुख के अनुसार ‘‘राजा साहब ने पखावज़ को लेकर कई मिश्र तालों का नवाचार किया। ताल पंचानन 21 मात्रा की ताल जय गणेश, लक्ष्मी ताल में परम्परागत रूप से बजाई जाने वाली ताल के ठेके परिवर्तन कर नया ठेके का निर्माण किया एवं रचना की जिसे हम लोग आज बजाते है दादा गुरु न लक्ष्मी ताल मे खण्ड व बोलों को परिवर्तित कर नई तालों की रचना।

रचना के बोल

‘‘धा धिट धा धिट धिट धा कत्त धिना तिट ता त्रक धित ता तिट कत्त गिन तागे त्रक धिकित तागेन धा धिट धिट धा धिट धा कत्त धिना तिट ता त्रक धित ता तिट कत्त गिन तागे त्रक धिकित तागेन धा‘‘

दादा गुरु ने अप्रचलित लुप्तप्राय तालों में नई रचना कर संगीत जगत के समक्ष प्रस्तुत किया।[3]

राजा छत्रपति सिंह जू देव द्वारा लिखी गई पुस्तक[4]

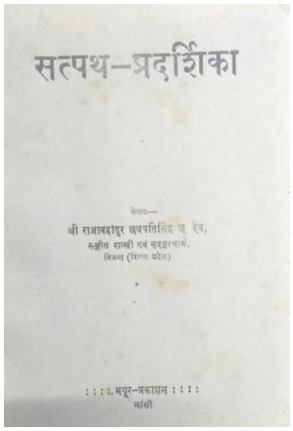

राजा छत्रपति सिंह जू देव द्वारा लिखी गई रचना

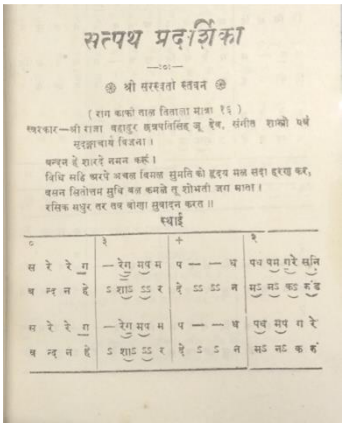

उपसंहार

राजा छत्रपति सिंह जूदेव बिजना राज के एकमात्र संगीत साधक हुए जिन्होंने अपने सांगीतिक सफर के दौरान गायन, वादन के पखावज, सितार वाद्य यंत्रों में अनेक प्रकार की रचना की। पखावज पर बजने वाली ताल मत ताल 9 मात्रा, रूद्र ताला ग्यारह मात्रा, इन सभी तालों के विस्तार क्रम में परिवर्तन कर नया विस्तार क्रम बनाया। राजा जी ने पखावज़-वादन का व्यवस्थित क्रम बनाया और यही क्रम राजा ने सभी तालों में रखा।

संदर्भ

1 पं. डालचन्द शर्मा, मृदंगाचार्य, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर दिनांक 6.12.2018 (साक्षात्कार)
2 अखिलेश गुन्देचा, पखावज वादक, राजस्थान विश्वविद्यालय अतिथिगृह, दिनांक 7.12.2018 (साक्षात्कार)
3 द्यादेश्वर मोली देशमुख, पखावज वादक, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, दिनांक 25.11.2018 (साक्षात्कार)
4 राजा छत्रपति सिंह ’जूदेव’, सत्पथ प्रदर्शिका, प्रकाशक सत्यदेव वर्मा, झांसी, 1950, पु.सं.1